(भाषा अर्जन और अधिगम)

भाषा (Language)–अर्थपूर्ण शब्दों को जब हम प्रस्तुत करते हैं तो वह भाषा कहलाती है। अपने मन के विचारों को प्रस्तुत करने के लिए हम भाषा का प्रयोग करते हैं। भाषा एक नियमबद्ध व्यवस्था है।

स्वीट के अनुसार –"ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रस्तुत करना ही भाषा है।"

बेंद्रिय के अनुसार –"भाषा एक तरह का चिन्ह है। चिन्ह का आशय उन प्रतीकों अथवा संकेतों से है जिनके द्वारा मानव अपने विचार दूसरों पर प्रकट करता है।"

भाषा का अर्जन (Acquisition of Language) जब हम वातावरण के साथ समायोजन करके भाषा को आत्मसात करते हैं, तो भाषा का अर्जन करना कहलाता है। भाषा अर्जन में बच्चा निरीक्षण के द्वारा भाषा का अर्जन करता है। वह दूसरों को देखता है कि दूसरे कैसे बात करते हैं और उनको देख–देख कर खुद से बोलना शुरु कर देता है। उदाहरणार्थ – बच्चा अपनी मातृभाषा अर्जन करके ही सीखता है।

भाषा का अधिगम (Learning of Language) जब बच्चा अपने व्यवहार में परिवर्तन करके भाषा सीखता है तो वह भाषा का अधिगम कहलाता है। अधिगम में बच्चा दूसरों ही सहायता लेकर सीखता है।

अर्जन और अधिगम में अंतर			
अर्जन		**अधिगम**	
1.	भाषा–अर्जन के लिए समृद्ध भाषायी परिवेश की आवश्यकता होती है	1.	भाषा अधिगम बिना भाषायी परिवेश के बिना भी हो सकता है क्योंकि यह व्यक्तिगत अवधान पर आधारित होता है।
2.	भाषा अर्जन एक सहज और स्वाभाविक प्रक्रिया है।	2.	भाषा अधिगम प्रयासपूर्ण होता है।
3.	भाषा अर्जन में भाषा के विभिन्न रुपों का प्रयोग होना आवश्यक है।	3.	भाषा अधिगम में भाषा का व्याकरण, पाठ्यपुस्तक तथा शिक्षण आवश्यक है।
4.	भाषा अर्जन में परिवेश से प्राप्त भाषिक आंकड़ों के आधार पर सहज रुप से भाषिक नियम बनाये जाते हैं।	4.	भाषा अधिगम में सीधे–सीधे व्याकरण के नियम सीखे जाते हैं।
5.	इसमें समाज–सांस्कृतिक विशेषताओं को सहज रुप से आत्मसात् किया जाता है।	5.	इसमें व्याकरण की अलग अलग छटाओं को आत्मसात किया जाता है।
6.	भाषा–अर्जन में विभिन्न संकल्पनाएं मातृभाषा में बनती हैं।	6.	भाषा अधिगम में संकल्पनाएं मातृभाषा के साथ साथ द्वितीय भाषा में भी हो सकती है।

EduBull.com